ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

कानपुर के राजनीतिक आन्दोलनों में सक्रिय संगठन एवं संस्थाएं

डॉ0 शहनाज बानो
सी0 एस0 जे0 एम0 वि" वविद्यालय, कानपुर

भारत में अंग्रेजो हुकूमत की गतिविधियों से भारतीय जनता विचलित हो उठी थी। जिनका प्रभाव सम्पूर्ण भारत पर पड़ा जो कि संयुक्त प्रान्त में विशेषता कानपुर में खाशा असर देखने को मिलता है। महात्मा गांधी 26 से 31 दिसम्बर 1961 में लखनऊ कांग्रेस अधिवेशन में सम्मानित हए और 1 जनवरी 1917 को सर्वप्रथम कानपुर पधारे थे। महात्मा गांधी ने इस यात्रा का वर्णन निम्न शब्दो में किया है – ''लखनऊ से मैं कानपुर गया था वहां भी देखा तो राजकुमार शुक्ल मौजूद है '' राजकुमार शुक्ल जी चपाणन बिहार के रहने वाले थे और नील के किसानों पर हो रहे अत्याचारों पर ब्रजकिशोर बाबू के सौजन्य से लखनऊ कांग्रेस अधिवेशन में प्रस्ताव किया और गांधी जी से वहीं भेट की थी। डा0 जवाहर लाल रोहतगी ने इस यात्रा को वर्णन 'नर्मदा पत्रिका' विद्यार्थी स्मृति अंक अक्टूबर 1961 में 'सार्वजनिक जीवन' शीर्षक में लिखा था।

21 जनवरी सन् 1920 को महात्मा गांधी कानपुर आकर, स्वदेशी भण्डार का उद्घाटन किया। 14 अक्टूबर 1920 को दूसरी बार आये। परेड मैदान में एक आम सभा को सम्बोधित किया था। कानपुर में यह उनका प्रथम भाषण था। उन्होने मार्मिक अपील करते हुए कहा था कि, अपने बच्चो को स्कूलों से निकाल ले, अदालतों और कौंसिलो के चुनावों का बहिष्कार करे तथा विलासिता का जीवन छोड़ स्वदेशी को अपनाएं। 9 अगस्त 1921 को गांधी जी तीसरी बार कानपुर आयें और उसी दिन महिलाओं की स्वदेशी वस्तु अपनाने का और विदेशी वस्तु का त्यागने का भाषण दिया। चौथी बार गांधी जी 24 दिसम्बर 1925 में कानपुर में पधारें, कई कार्यक्रमों में हिस्सा लेने के लिए गांधी जी को 6 दिन तक कानपुर में रूकना पड़ा था। 24 दिसम्बर को 'कांग्रेस स्वदेशी प्रदर्शनी' का उद्घाटन किया। कांग्रेस अधिवेशन में गांधी जी ने कांग्रेस सदस्यों को आदतन खादीधारी होन का प्रस्ताव पारित किया। 25 दिसम्बर 1925 को कांग्रेस का 40 वां अधिवेशन हुआ। इसकी अध्यक्षता श्रीमती सरोजनी नायडू ने की।

कानपुर में गांधी जी पांचवी बार 22 से 24 सितम्बर 1929 को क्राइस्ट चर्च कालेज में सन्देश दिया ''आप लोग मुझसे पूछते है कि मैं सन् 1930 में आप से क्या करवाना चाहता हूँ। मैं 1930 में जरूरत पड़ने पर हंसते हुए मौत का सामना करते हुए देखना चाहूँगा। किन्तु वह मौत पापी व अपराधी की मौत न हो ईश्वर उन्हे केवल बलिदान स्वीकार करता है। जो हृदय से पवित्र होते है।'' गांधी जी छठी बार 22 जुलाई से 26 जुलाई 1934 को कानपुर में रहे। गांधी जी डा0 जवाहर लाल रोहतगी के बंगले पर ठहरे थे। 24 जुलाई 1934 को गांधी ने तिलकहाल का उद्घाटन किया। अस्तुः गांधी जी के आवाहन से कानपुर में जनजीवन जागृत हुआ, महिलाओं को महात्मा गांधी ने विशेषता प्रभावित किया। सन् 1905 में लार्ड कर्जन

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

ने बंगाल को विभाजित किया। लार्ड मॉरले ने इसको 'एक निश्चित घटना' बतलायी।[1] इसी समय बंगाल में क्रांतिकारी दल का जन्म हुआ। 30 अप्रैल 1908 को मुजफ्फरपुर में भारत का पहला बम चलाया गया। क्रान्तिकारी दल के दो सदस्य प्रफुल्ल चाकी और खुदीराम बोस द्वारा जिला जज मिस्टर किंग्सफोर्ड पर फेका जाना था, धोखे से दो अंग्रेजी महिलाएं, मिसेज और मिस केनेडी इस बम की शिकार हुई। प्रफुल्ल चाकी ने खुद को गोली मार ली और खुदीराम बोस को गिरफ्तार कर फांसी दे दी गई। इन घटना की प्रतिक्रिया कानपुर में हुई। यहां कुछ तंरूणों ने क्रान्तिकारियों पर सहानभूति की। इसी समय अमेरिका की 'गदरपार्टी' द्वारा प्रकाशित 'तलवार' नामक पत्र कानपुर आने लगा, और गुप्त रूप से स्वतन्त्रता आन्दोलन से सम्बन्धित व्यक्तियों में इस पत्र का प्रचार होने लगा। लोग इस पत्र को बड़े चाव से पढ़ते थे। इसके मुख्य पत्र पर लिखा रहता था।

गाजियों मे जब तक बाकी है बू ईमान की,
तब तलक लन्दन तक चलेगी तेग हिन्दुस्तान की।

इसक बाद सन् 1913 में गणेश शंकर विद्यार्थी के मकान कोपरगंज में और नारायण प्रसाद अरोड़ा के मकान पटकापुर में एक साथ तलाशी हुई। विदेश से आया क्रान्तिकारी साहित्य के सम्बन्ध में तलाशी हुई थी। अरोड़ा जी के धर कुछ पर्याप्त साहित्य था। नारायण प्रसाद अरोड़ा की धर्मपली कृष्णा अरोड़ा ने पुलिस की आँखों में धूल झोंक कर घर में ही साहित्य को इधर–उधर कर दिया। अधिकारियों के छानबीन करने के बाद घर में कुछ नहीं मिला। कानपुर में इस तलाशी की खासी चर्चा हुई।

स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान कानपुर में डा0 जवाहर लाल रोहतगी का घर राजनीतिक गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र था।[2] गांधी जी के अलावा नेता सुभाषचन्द्र बोस व चन्द्रशेखर आजाद भी डा0 जवाहर लाल के घर ठहरते थे। डा0 जवाहर लाल रोहतगी की पुत्री डा0 चन्द्रकान्ता रोहतगी ने 'कानपुरिया' के एक साक्षात्कार में बताया कि बापू उनके जी0एन0के0 (खत्री) स्कूल के बगल में ठहरते थे। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के आवाहन पर देश भर में सरकारी स्कूलो के बहिष्कार के साथ चेतना जाग्रत करने के लिए मारवाड़ी विद्यालय और राष्ट्रीय विद्यालय खुले। मारवाड़ी विद्यालय के संस्थापक कृष्ण विनायक फड़के के गुरु रघुवर दयाल की देख–रेख में चलता था।

प्रथम विश्व युद्व के समय श्री राजा बिहारी घोष, श्री लाला हरदयाल व राजा महेन्द्र प्रताप ने जर्मन जा कर वहाँ के बादशाह कैसर विलियम से अंग्रजों के विरुद्व गुप्त सन्धि की और वचन दिया कि भारतीय सेनाएं युद्ध में नहीं उतरेंगी। इस विषय में भारतीयों को जानकारी नही थी। प्रथम विश्व युद्ध छिड़ने पर नौकरी के लालच में भारतीय नौजवान सेना में भरती होकर कूद पड़े। नेताओ का यह प्रस्ताव असफल रहा।

भारत में मई 1940 में कांग्रेस कार्य समिति की बैठक हुई। जून में इलाहाबाद में भारत के समस्त राजनीतिक दलों का सम्मेलन हुआ इसमें विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा अदालतों का बहिस्कार करने के कार्यक्रम का अनुमोदन हुआ। 1

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

अगस्त 1940 को असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ हो गया। इस समय असहयोग आन्दोलन तथा खिलाफत आन्दोलन के संदर्भ में जनता में भारी उत्साह था।

कानपुर में हिन्दु – मुस्लिम एकता देखते ही बनती थो, परन्तु यह एकता अंग्रेजो की आँखो में खटकती थी। 8 अगस्त 1921 को महात्मा गांधी का कानुपर में फिर आगमन हुआ। गांधी जी का यहां के नागरिकों ने अभिनन्दन किया। कानपुर में खादी की बिक्री हेतु 'सस्ता खद्दर भण्डार' खोला गया। 'नवयुवक चरखा मण्डल' की स्थापना मनोहर लाल जैन, देवकुमार जैन तथा रामनाथ गुप्त ने की तथा 'स्वराज्य आश्रम' की स्थापना पं0 गंगा नारायण अवस्थी ने की। इसके अलावा बादशहीनाका पर 'राम भरोसे खद्दर भण्डार' खोला गया। नर्वल में खादी उत्पादन केन्द्र खुले। खादी आन्दोलन का अभिन्न अंग बन गया था।

सन् 1924 से 1930 तक विक्रमजीत सिंह कानपुर के नगरपालिका के चैयरमैन पद पर रहे। सन् 1924 को नारायण प्रसाद अरोड़ा 'स्वराज पार्टी' के टिकट पर प्रान्तीय लेजिस्लेविट काउन्सिल उ0प्र0 के लिए कानपुर के प्रतिनिधि चुने गये है।

कानपुर मे सन् 1925 ई0 में श्रीमती सरोजनी नायडू की अध्यक्षता में कांग्रेस का 40 वां महाधिवेशन हुआ। इस उत्तरदायित्व का निर्वाह अनेक विपरीत परिस्थितियों के होते हुए भी सरोजनी नायडू बड़े उत्साह के साथ किया। डा0 जवाहर लाल रोहतगी का घर कांग्रेस के रंग में रंगा था। साथ ही, माता जी (स्वरुपवती रोहतगी) कांग्रेस संगठन की प्रमुख कार्यकत्री थी। जिनके साथ ज्येष्ठ पुत्री डा0 चन्द्रकाता रोहतगी उत्साह से काम करती थी। अधिवेशन अभूतपूर्व सफलता के साथ सम्पन्न हुआ जिसकी प्रशंसा गांधी, त्यागमूर्ती नेहरु, विभिन्न प्रान्तों के प्रतिनिधियों आदि सभी ने मुक्त कण्ड से की थी। इस अधिवशन में समिति के अध्यक्ष बने डा0 मुरारी लाल रोहतगी, मंत्री गणेश शंकर विद्यार्थी तथा डा0 जवाहर लाल रोहतगी थे। इस सिलसिले में महात्मा गांधी 23 दिसम्बर को कानपुर में पधारे थे। रेलवे स्टेशन के निकट लगभग 25 हजार पुरुष व महिलाएं एकत्रित हुए। डा0 सन्तशरण अवस्थी के अनुसार ''कांग्रेस अधिवेशन ने अंग्रेजी–भाषी स्त्री पुरुष की संख्या खासी बड़ी थी''।

इस समय कांग्रेस एक बड़ी संस्था बन चुकी थी। उसका महाधिवेशन करना कोई आसान नहीं था। श्री गंगाधर गणेश, जोग (जी0जी0 जोग) के नेतृत्व में कानपुर कांग्रेस सेवादल की स्थापना हुई। इसमें 1200 स्वयंसेवक, सेविकाएं शामिल थी। डा0 जवाहर लाल रोहतगी की पत्नी स्वरुपवती परिश्रम से कांग्रेस अधिवेशन कानपुर में सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। इसकी प्रशंसा गांधी जी, नेहरु जी एवं सरोजनी नायडू ने अपने मुक्तकण्ठ से की। ''इस अधिवेशन ने कानपुर की राजनीति तथा राष्ट्रीय चेतना में महत्वपूर्ण योगदान दिया। भारत में 26 जनवरी 1930 को स्वतन्त्रता दिवस मनाया गया। 6 जनवरी 1930 को कानपुर ने स्वतन्त्रता सप्ताह के रुप में मनाया जिसमें विभिन्न वर्गो के लोगों ने अलग–अलग प्रभात फेरियाँ निकली। व्यापारियों की अगुवायी लाला कमलापति सिंहानिया ने की। कांग्रेस द्वारा जारी प्रतिज्ञा पत्र को जनता ने एक स्वर में दोहराया।

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

गांधी जी ने स्वराज्य के लिए अहिंसात्मक संघर्ष कराकर विकल्प चुनने के लिए कहा कि अपनी इच्छा से जहाँ उचित समझ सविनय अवज्ञा (सिविल नाफरमानी) शुरुआत कर सकते है। अतः 'नमक कानून' के प्रावधानों का उल्लंघन करने का निश्चय किया। 12 मार्च 1930 को 78 अनुयायियों के साथ साबरमती आश्रम से दांडी समुद्र तक की ऐतिहासिक यात्रा शुरु की, इसका प्रभाव कानपुर में भी पड़ा।[3] सन् 1930 के सत्याग्रह के सिलसिलें में सर्वप्रथम प्यारेलाल अग्रवाल और जी0जी0 जोग ने श्रद्वानन्द पार्क में नमक बनाकर इस कानून को तोड़ा और जेल गये। नमक सत्याग्रह में कानपुर के कुछ कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। जिसमें प्रमुख थे–मुकुन्द चरण निगम एडवोकेट, देश बहादुर बैजल, बद्रीनाथ कपूर, गोवर्धन दास खन्ना, प्रकाश नारायण सक्सेना, सिद्व प्रसाद और हमीद खाँ आदि।

कानपुर मे सन् 1931 की एक महत्वपूर्ण घटना थी। पं0 जवाहर लाल नेहरु द्वारा नर्वल में सेवा आश्रम भवन का शिलान्यास तथा सन् 1931 में तिलकहाल का शिलायन्स किया गया। आगे चलकर तिलकहाल स्वतन्त्रता आन्दोलन की सभी गतिविधियों का केन्द्र बना गया। सन् 1931 में करांची में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। सम्पूर्ण देश ने एक बार फिर आन्दोलन की राह पकड़ी। सन् 1931 ई0 में कानपुर में आन्दोलन के बिन्दु थे, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार, शराब की दुकानों पर धरना, चरखा व खादी का प्रचार, हिन्दू–मुस्लिम एकता, सरकारी नौकरियों व उपाधियों को लौटाना तथा शिक्षण संस्थाओं को छोड़ना आदि। इस आन्दोलन में एक ओर पुलिस जुल्म की गति बढ़ती तो दूसरी ओर आन्दोलन तीव्र गति से आगे बढ़ने लगा। पुराने कांग्रेसिया के साथ कांग्रेस की नई पीढ़ी ने कंधे से कंधा मिलाकर आन्दोलन में भाग लिया। जैसे कि महिलाओं में प्रमुख थी – श्रीमती देवी मुसद्दी, श्रीमती राजकुमारी बैजल, श्रीमती शान्ति देवी निगम, श्रीमती रुपकुमारी खेतान और श्रीमती रामकली पाण्डेय। पुरुषों में प्रमुख थे – रामचन्द्र मुसद्दी, राम चन्द्र निगम, राम प्रसाद निगम, राम चन्द्र, लक्ष्मीकान्त पाण्डेय, कैलाश द्विवेदी, हकीम बनारसी दास, हकीम कन्हैया लाल, गजपतराय सक्सेना, गंगा सहाय चौबे तथा देवी प्रसाद बाजपेयी आदि थे।

द्वितीय विश्व युद्ध से कानपुर की राजनीतिक गतिविधियाँ प्रभावित हुई। जिसमें क्रान्तिकारियों का कार्य सुचारु रुप से संचालित नहीं हुआ। कांग्रेस कमेटी के कार्यो में प्रगति नही हुई। 9 अगस्त 1942 को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने भारत छोड़ो आन्दोलन का प्रस्ताव पास किया। गांधी जी ने 'करो या मरो' का नारा दिया। इस समय भारत छोड़ो आन्दोलन को संगठित करने व दिशा निर्देश देने वाला कोई संगठन न था। विद्रोह की कोई योजना पहले से न थी। देश भर में 250 रेलवे स्टेशन फूंक दिये गए, 550 पोस्ट आफिस पर हमले हुए, रेलपटरियां उखाड़ी गयी। 9 अगस्त 1942 से 31 दिसम्बर 1942 तक 60226 व्यक्ति गिरफ्तार हुए, 18,000 नजरबन्द किए गये। पुलिस व फौज की गोलियों से 950 शहीद हुए 1630 घायल हुए।[4]

अनेक स्थानों पर स्वतन्त्रता का झंडा फहरा दिया गया था। जिस समय ऐसा आन्दोलन चल रहा था, कानपुर चुप कैसे रहता। अब तक स्वतन्त्रता के जितने

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

आन्दोलन हुए थे। सभी में कानपर नें अपनी भागीदारी दिखाई। सन् 1930 सत्याग्रह को नही भूल सकते। उन वीर नारियों को नमन किए बिना नही रह सकते।[5]

सन् 1942 के स्वतन्त्रता आन्दोलन में कानपुर के एस0एन0सेन बालिका विद्यालय की छात्राएं भी मैदान मे उतर आई थी। श्रीमती रुपकुमारी खेतान[6] बताती है कि जब बालिकाएं सड़को पर उतर आई। तो पुलिस वालों ने उन पर लाठी चार्ज कर दिया। रुप कुमारी ने एक पुलिस वाले का झंडा छीन लिया। सावित्री अरोड़ा उनसे कहने लगी ''मार बिटिया मार।'' आज हम सेन बालिका की इन छात्राओं को प्रमाण करते है और उनके साथ हजारो माताओं–बहनों को भी, जो उस दिन रणचंडी बनकर निकल पड़ी थी। 1942 के स्वतन्त्रता आन्दोलन के दिन सेन बालिका विद्यालय, की उन लड़कियों में श्रीमती रुपकुमारी खेतान के अलावा श्री प्यारेलाल अग्रवाल की पुत्री कुसुम अग्रवाल, राम चन्द्रमुसद्दी की बेटी शीला मुसद्दी नारायण प्रसाद अरोड़ा की बेटियाँ सावित्री अरोड़ा और सीता अरोड़ा, अतिया, नफीस और (बाद में इरफान हबीब की पत्नी) सायरा के नाम विशेष उल्लेखनीय है। ऐसी ही लड़कियों ने बाद में नारी मुक्ति आन्दोलन तथा मजदूर आन्दोलन में अग्रणी भूमिका निभाई।

सन् 1942 में कांग्रेस के पास काई कार्य दिशा नहीं थी। आन्दोलन असंगठित था। यह कहना गलत नहीं होगा कि हमारे प्रांत या नगर के नेताओं को आने वाले हालातों का अहसास नहीं था। निश्चय ही इस समय के लिए पहले से तैयारी शुरु कर दी थी। प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी, कानपुर में छपाई का सारा सामान भज चुकी थी। 9 अगस्त 1942 को कुछ नेता भूमिगत हो गये। आन्दोलन शुरु होने के तीन–चार दिन पहले प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी का गुप्त अखबार कानपुर में वितरित होने लगा था। कांग्रेस कमेटी का समान व कागज बहुत ही गुप्त रुप से तत्कालीन मैनेजर श्री रामजी लाल गुप्त और रामकुमार मिश्र के द्वारा 'अपर इण्डिया सुगर एक्सचेंज' के कार्यालय में रख दिया गया था। तत्कालीन चेयरमैन श्री मानिक लाल एच0पारिख तथा शायद कुछ अन्य डायरेक्टरों के अलावा इस तथ्य को कोई नही जानता था।[7] सन् 1947 को पेटियों में बन्द सामान व कागज बाद में वापस आ गया। उपर्युक्त विवरण के अनुसार कानपुर में 20 वीं शताब्दी में राजनीतिक स्वतन्त्रता आन्दोलन, क्रान्तिकारी आन्दोलन में समायानुसार परिवर्तन हुए। कानपुर में राजनीतिक गतिविधियों को सुचारु रुप से संचालन का काय महात्मा गांधी, नेहरु, सुभाष चन्द्र बोस, सरोजनी नायडू, चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह, लोकमान्य तिलक आदि के कानपुर के आवागमन से जनता प्रभावित होती गयी और और भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में भागीदारी निभाती गई। कानपुर में सन् 1925 में कांग्रेस के 40 वें महाधिवेशन का महत्वपूर्ण योगदान था। जिससे कानपुर के समाज में महिला जागृति को अधिक बल मिला।

स्वाधीनता आन्दोलन से हमारा आशय उस आन्दोलन से है जो भारत में बिट्रिश औपनिवेशिक सत्ता का अन्त करने के लिए है। भारतीय राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन मुख्यताः सन् 1857 से 1947 तक चला। 90 वर्षो का काल खण्ड में व्यापक परिवर्तन हुआ। राष्ट्रीय आन्दोलन इस दौरान कानपुर नगर में भी

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

बुद्विजीवियों से होकर उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग, निम्न वर्ग, किसानों एवं मजदूरों तक पहँचा।

कानपुर में राजनीतिक आन्दोलनों में मध्यवर्ग के अमीर लोग ही सक्रिय रुप से भाग लेते थे। क्रान्तिकारी आन्दोन में स्वतः सभी वर्गो के लोग सम्मिलित हुए। कानपुर के भावीं नेता नारायण प्रसाद अरोड़ा बनारस अधिवेशन में शामिल होने के बाद पूर्णतया राजनीतिकरण हो गये। राष्ट्रीयता का प्रचार करना उनके जीवन का प्रमुख उद्देश्य था। उन्होनें 'हिन्दू क्लब' नाम की संस्था स्थापित की, इस संस्था के माध्यम से राष्ट्रवादी साहित्य का प्रचार किया। सन् 1905 में अनेकानेक कारणों का प्रमुख वर्ष माना जाता है। बंग–भंग आन्दोलन से दो धाराएं बहने लगी, एक 'गरम दल' दूसरा 'नरम दल'। नरमदल, के नेता गोखले व फिरोजशाह मेहता थे। 'गरम दल' के नेता लोकमान्य बालगंगाधर तिलक थे। कानपुर मे भी दोनो धाराओं के अनुयायी थे। सन् 1907 की सूरत कांग्रेस अधिवेशन मे राजनीति का नया मोड़ आया है। इस अधिवेशन में नारायण प्रसाद अरोड़ा ने कानपुर के प्रतिनिधि ही हैसियत से हिस्सा लिया, नारायण प्रसाद अरोड़ा 'गरम दल' के समर्थक व प्रचारक थे। कांग्रेस संगठन पर नरम दलीय, नेताओं का अधिकार रहा। अतः 'गरम दल' ने कांग्रेस के भावी अधिवेशनों का बहिष्कार किया।

सन् 1888 में वकील पं0 पृथ्वीनाथ चक के बाद कानपुर कांग्रेस के अध्यक्ष डा0 मुरारी लाल रोहतगी बने। कांग्रेस मे केवल नरम दल ही सक्रिय था। गरम दल तो गुप्त बैठके, गुप्त पुस्कालय स्थापित करके क्रान्तिकारी विचारों को फैलाने मे संलग्न थें। इसके मुख्य नेता पं0 राम प्रसाद मिश्र और नारायण प्रसाद अरोड़ा थे। कानपुर से साप्ताहिक पत्र 'प्रताप' 9 नवम्बर 1913 को प्रकाशित हुआ। जन–जन मे राजनीतिक दिशा प्रदान करने में महत्वपर्ण योगदान दिया। 'प्रताप' कानपुर तथा उ0प्र0 के राजनीतिक वातावरण मे नई स्फूर्ति पैदा करने लगा। 'हामरूल लीग' की स्थापना पं0 रामप्रसाद मिश्र ने मेस्टन रोड़ स्थित अपने आवास पर 1916 को स्थापित किया। मिश्र के द्वारा, जीवन और उत्साह नामक समाचार पत्र प्रकाशित होते थे।

श्री नारायण गणेश परांजपे के प्रयास स्वरूप डा0 जवाहर लाल रोहतगी ने सन् 1914 मे कानपुर 'थियोसोफिकल स्कूल' की स्थापना की। सन् 1918 में पं0 कामदत्त के भगीरथ प्रयास से कानपुर में 'मजदूर सभा' की स्थापना की। आचार्य शिव प्रसाद गुप्त लिखते है कि–

''कानपुर मे भी कांग्रेस कमेटियां गठित की गई। कांग्रेस दो गुटों में बट गया था। जिला कांग्रेस के सूत्रधार पं0 रामप्रसाद मिश्र और नगर कांग्रेस का संचालन'' डा0 मुरारी लाल रोहतगी और गणेश परांजपे के हाथों मे था। दोनो दलों मे कार्य करने की अभूतपूर्व स्पर्धा थी, न कि आपसी कोई द्वेष भाव ।'' सन् 1919 को भारत मे जलियावाला काण्ड़ के फलस्वरूप देशव्यापी हड़ताले हुई, जिससे समस्त जनजीवन अस्त–व्यस्त हो गया। कानपुर भी इससे अछूता नही रहा। खुर्द महलपार्क (श्रद्धानन्द पार्क) मे डॉ0 मुरारी लाल रोहतगी की अध्यक्षता मे सांयकालीन सभाआ का आयोजन हुआ। जिसमें नारायण प्रसाद अरोड़ा, हसरत मोहानी, गणेश

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

शंकर विद्यार्थी जी आदि शामिल हुए थे। इन साभाओं ने कानपुर की राजनीतिक चेतना जगाने मे महत्वपूर्ण योगदान दिया।

सन् 1919 मे कानपुर अनेक उपलब्धियों का वर्ष रहा। इसी वर्ष 'इम्प्रुवमेन्ट टस्ट' की स्थापना हुई, जिसके प्रथम चेयरमैन कानपुर के कलेक्टर एन0सी0 स्टिफ बने।

कानपुर मे गांधी जी के आवाहन पर पं0 बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' उमाशंकर दीक्षित, रामभरोसे त्रिपाठी, प्यारेलाल अग्रवाल, बलखण्ड़ी दीन सेठ, हनुमान प्रसाद, गया प्रसाद कटियार व बद्री त्रिपाठी ने पढ़ाई छोड़ दी। कानपुर मे मनोहर लाल जैन, देव कुमार जैन तथा राम नाथ गुप्ता ने 'नवयुवक चरखा मण्डल' की स्थापना की। खादी केन्द्र व खद्दर भण्डार खुले। 'स्वराज्य आश्रम' की स्थापना हुई। सन् 1916 मे औरैया के पं0 गेंदा लाल ने 'शिवाजी समिति' का गठिन किया।[8] सन् 1921 मे असहयोग आन्दोलन, अपने चरमोत्कर्ष पर था, आन्दोलन वापसी की तीव्र प्रतिक्रिया हुई। नेता सुभाष चन्द्र बोश ने कहा ''ठीक उस समस्त जनता का उत्साह अपन चरमोत्कर्ष पर था, वापस लौटने का आदेश देना 'राष्टोय दिवस' मनाया गया। कानपुर मे यह 'स्वतन्त्रता सप्ताह' के रूप में मनाया गया। जगह–जगह सभाओं व जलूसों का तांता लग गया। कानपुर की जन सभाओं मे 26 जनवरी को स्वाधीनता का संकल्प लिया गया। सन् 1913 मे करांची कांग्रेस अधिवेशन के बाद आजादी के इस आन्दोलन की गति और तीव्र हो गयी। 23 मार्च 1931 को भगतसिंह, सुखदेव व राजगुरू को लाहौर मे फांसी दे दी गई। इससे कानपुर में विद्रोह के स्वर फूट पड़े, शहर दंगा ग्रस्त हो गया। हिन्दू–मुस्लिम दंगा मे सरकार ने घी डाल कर आग की ज्वाला और अधिक भड़का दी थी। यह दंगा गणेश शंकर विद्यार्थी की आहूति लेकर ही शान्त हुआ। सन् 1934 के बाद कांग्रेस के अन्दर समाजवादियों का प्रभाव बढ़ने लगा। आचार्य नरेन्द्र देव व जय प्रकाश नारायण ने 'कांग्रेस समाजपार्टी' बनाईं कानपुर मे राजाराम शास्त्री एवं हरिहर शास्त्री के प्रयासों से 'कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी' की शाखा का गठन हुआ। सूर्य प्रसाद अवस्थी, सुदर्शन चक, शकुन्तला श्रीवास्तव आदि भी कांग्रेस समाजवादी थे। गणेश शंकर विद्यार्थी, मौलाना हसरत मोहानी, राम प्रसाद मिश्र, डॉ0 मुरारी लाल रोहतगी ने भी कानपुर मे असहयोग आन्दोलन का नेतृत्व किया। सन् 1922 मे इस आयोजन को झटका तब लगा, जब गांधी जी ने 'चौरो–चौरा काण्ड़' के बाद असहयोग आन्दोलन को वापस ले लिया। अरोड़ा जी ने सन् 1922 में 'तिलक मेमोरियल सोसाइटी' का गठन किया। डॉ0 हसरत मोहानी ने 1923 में 'इकलाब–जिन्दाबाद' का नारा कानपुर वासियों को दिया। यह नारा आजादी के दीवानो मे प्राण शक्ति फूंकता रहा।

सन् 1924 मे नारायण प्रसाद अरोड़ा ने पं0 कृष्ण दत्त पालीवाल, जी0 जी0 जोग तथा मन्नीलाल अवस्थी के साथ कानपुर मे 'स्वराज पार्टी' का गठन किया। छुआछूत मिटाने के लिए गांधी जी के अभियान मे कानपुर भी पीछे नही रहा। अरोड़ा जी की धर्मपत्नी श्रीमती कृष्णा अरोड़ा ने 'बिरहाना हरिजन स्कूल' की स्थापना की और हरिजन बस्ती मे यह स्कूल सफलता पूर्वक चलता रहा। श्रीमती

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

कृष्णा अरोड़ा ने पटकापुर मोहल्ले की कुछ महिलाओं को इस स्कूल मे सेवा प्रदान करने हेतु प्रेरित किया।

सन् 1920 में 'अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस' की स्थापना हुई, इसमे राष्ट्रोय स्तर के नेता और वामपंथी नेता साथ में उपस्थित हुए थे। यहॉ पर स्वतन्त्रता प्राप्त का लक्ष्य रखा गया था। पहला 'पूंजीवाद' का अन्त दूसरा 'स्वराज्य' की प्राप्ति, अपनी पकड़ मजबूत कर के उनका उपयोग राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन म करना पड़ा। कानपुर मे 'कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी' की शाखा का गठन राजाराम शास्त्री ने हरिहर नाथ शास्त्री के सहयोग से किया। समाजवादियों की पकड़ कांग्रेस पर मजबूत होने लगी थी। कानपुर में 1924 में क्रान्तिकारी दल हिन्दुस्तान प्रजातन्त्र सेना, का संगठन हुआ। 1930–32 म हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातन्त्र संघ, का संगठन हुआ। कानपुर के कम्यूनिस्ट नेता सन् 1940 से ही जेलों मे बन्द थे। सर्वप्रथम श्री सुरेन्द्र पांड़े, वीरेन्द्र पांड़े, मणिलाल शर्मा, राजाराम शर्मा, महेन्द्र भारतीय आदि। रामचन्द्र रूसिया को सबसे अधिक खतरनाक समझकर राजस्थान के देवली कैप भेज दिया गया था। इन गिरफ्तारियों के बाद भी राष्ट्रीय आन्दोलन रूका नही। सन् 1940 म श्री राम स्वरूप के नेतृत्व मे 'निलाहिस्ट पार्टी' का गठन हुआ था। इस पार्टी से लगातार पर्चे प्रकाशित होते रहे। जोगेश बाबू प्रायः कानपुर के सभी क्रान्तिकारी दलो का अपन साथ लाने मे सफल हुए। श्री रामस्वरूप मिश्र की गिरफ्तारी के बाद श्री अनंत राम श्रीवास्तव ने इस दल का पुर्नगठन किया।

सन् 1923 में कानपुर के आग्रणी नेताओ के सहयोग से 'नागरी प्रचारिणी सभा' की स्थापना की गई। सन् 1924 मे नारायण प्रसाद अरोड़ा ने 'स्वराज्य पार्टी' की स्थापना की। कानपुर की प्रमुख समाजसेवी संस्था होटल बैलीरियों मालरोड़ मे 'रोटरी क्लब कानपुर' की स्थापना स्वतन्त्रता आन्दोलन के समय हुई थी। 3 अप्रैल 1943 ई0 मे लाला कैलाशपत सिंहानियां द्वारा 'रोटरी क्लब' की स्थापना की गयी थी।

कानपुर में सन् 1925 मे जिन क्रान्तिकारियों का आगमन कानपुर में हुआ, उनमें जयचन्द्र विद्यालकर, मन्मथनाथ गुप्त, चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह आदि थे।[9] कानपुर क्रान्तिकारी दल का केन्द्र बन गया। पं0 रामप्रसाद मिश्र ने मेस्टन रोड़ स्थित अपने आवास पर 1916 मे 'होमरूल' की स्थापना की सन् 1930 ई0 में कानपुर के मेस्टन रोड़ के श्रद्धानन्द पार्क मे 'नमक सत्याग्रह' प्रारम्भ किया, प्यारे लाल अग्रवाल और जोन बाबू ने नमक कानून तोड़ा।[10] सन् 1937 मे संयुक्त प्रान्त मे कांग्रेस का मंत्रिमण्डल बन जाने पर काकोरी काण्ड़ के सभी बंदी रिहा कर दिए गए थे।

कानपुर मे इन क्रान्तिकारियों का गर्म जोशी से साथ स्वागत किया गया। जुलूस निकाला, परेड़ मैदान मे विशाल सभा आयोजित कर उन्हें सच्चा देश भक्त कहा गया। सन् 1930–32 के मध्य कानपुर की युवा शक्ति की राजनीतिक चेतना प्रबल हो गयी।

25 जुलाई 1925 को कमाल खां के हाते मे 'कम्यूनिस्ट पार्टी' का गठन हुआ। फूलबाग मे कांग्रेस प्रान्तीय अधिवेशन मे पुलिस ने झण्ड़ा उखाड़ फेंका इसके

परिणामस्वरूप 1928 मे 'झण्ड़ा सत्याग्रह' प्रारम्भ हुआ। सन् 1929 में गणेश शंकर विद्यार्थी ने कांग्रेस यूथ लीग, की स्थापना की। सन् 1936 ई0 मे मुस्लिम लीग कानपुर, शाखा की स्थापना हुई। कानपुर में 'चिल्ड्रेन एसोसिएशन' की स्थापना कृष्ण विनायक फड़के द्वारा की गई। इसका उद्घाटन सन् 1940 मे विजय लक्ष्मी पण्ड़ित द्वारा किया गया। सितम्बर सन् 1940 में कानपुर मे कांग्रेस कमेटी के आवाहन पर 'व्यक्तिगत सत्याग्रह' प्रारम्भ हुआ। कम्यनिस्ट सशस्त्र क्रान्ति के जरिए ब्रिटिश साम्राज्य को भारत से उखाड़ फेकने का षडयन्त्र रच रहे थे।

अतः कानपुर मे अनेक संगठनों के बनने, वैचारिक परिवर्तन एवं शैक्षिक जाग्रति का दौर था। स्वाधीनता प्राप्ति के लिए चलाये गये क्रान्तिकारी आन्दोलन, हिंसात्मक आन्दोलन, अहिंसात्मक आन्दोलन, राजनीतिक परिवर्तन, संगठन मे कानपुर की जन–मानस मे महत्वपूर्ण योगदान दिया। राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन मे विशेष शक्ति प्रदान की। आन्दोलनो के दौरान जनता मे देश–प्रेम एवं स्वतन्त्रता की चाह जीवन्त रही। अंग्रेजो की साजिश के बाद सन् 1931 के सम्प्रदायिक दंगे के सिवाय, हिन्दू–मुस्लिम वैमनस्य त्याग कर एक जुट होकर स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष करती रह। सन् 1931 के साम्प्रदायिक दंगे को विद्यार्थी जी के बलिदान ने अंग्रेजो को अहसास करा दिया कि कुटिलता से दिलो को बांटने की कोशिश जनमानस के कारण कानपुर मे कामयाब न हो सकी। कानपुर की धरती पर हुए कांग्रेस के 40 वे राष्ट्रीय महाधिवेशन मे 'हिन्दुस्तानी भाषा' को कांग्रेस की भाषा बनाने का निर्णय लेना, कांग्रेस के पूरे देश की जनता को करीब ला दिया। राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन मे कानपुर का योगदान वास्तव मे स्मरणीय है।

संदर्भ ग्रन्थः

1 शिव नारायण त्रिपाठी, 'दि मॉरल' रजत जयन्ती विशिष्ट अंक सन् 1979–2004 हिन्दी साप्ताहिक पत्रिका, पृष्ठ 27
2 नारायण प्रसाद अरोड़ा, लक्ष्मीकान्त त्रिपाठी, कानपुर के विद्रोही पृष्ठ 109
3 जवाहर लाल रोहतगी अभिनन्दन ग्रन्थ पृष्ठ 225
4 डा0 अरविन्द प्रसाद अरोड़ा 'मुक्त' कानपुर का इतिहास भाग – 3 पृष्ठ 20
5 कानपुर : कल, आज और कल, भाग–2 कानपुरियम पृष्ठ 19
6 भेटवार्ता : रुपकुमारी खेतान, 6 मई 2005
7 कानपुर कल आज कल और कल कानपुरियम भाग–2 पृष्ठ 22
8 डा0 अरविन्द अरोड़ा 'मुक्त' कानपुर का इतिहास भाग–3
9 कानपुर कल, आज और कल, भाग–2 कनपुरियम पृष्ठ–26
10 नारायण प्रसाद अरोड़ा, लक्ष्मीकान्त त्रिपाठी, 'कानपुर के विद्रोही' पृष्ठ–115